'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १४१ | वाराणसी, मंगलवार, ८ दिसम्बर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रातः प्रवचन

ममदोट (पंजाब) २१-११-'५९

सामाजिक तरक्की के लिए स्त्री-शिक्षा की अनिवार्यता

[प्रातः काल पू० विनोबाजी पड़ाव पर पहुँचे। उस समय गाँव के लोगों ने उत्साह से उनका स्वागत किया। उपस्थित जन-समुदाय में एक भी बहन नहीं थी। इसलिए विनोबाजी ने प्रातः प्रवचन में जो विचार व्यक्त किये, उनमें इस ओर स्पष्ट संकेत है।— सं०]

पत्नियों की प्रधानता

रामचन्द्रजी यज्ञ करना चाहते थे। उस समय सीता वहाँ नहीं थी। उसे वनवास दिया गया था। इसलिए वह जंगल में ही वाल्मीकिजी की कुटी में थी। रामजी ने यज्ञ सम्पन्न करने के लिए महर्षि वशिष्ठ को बुलाया। वशिष्ठ ने कहा—यज्ञ करो, यह तो बड़ी अच्छी बात है। परन्तु यज्ञ करना है बड़ा मुश्किल। क्योंकि यज्ञ के समय पति के पास पत्नी भी रहनी चाहिए। उसके बिना यज्ञ सफल नहीं होता। रामचन्द्रजी ने यह बात सुनी तो उन्होंने इसमें से किसी तरह हल निकालने के लिए कहा। इसपर वशिष्ठ ने सीताजी की मिट्टी की प्रतिमा बनाने की बात बतायी। राम के पास सीता की प्रतिमा रखी गयी, तब यज्ञ सफल हुआ।

अपने यहाँ का रिवाज है कि पति अकेला कोई काम नहीं कर सकता। हर काम की सफलता के लिए पति के साथ पत्नी का भी योग चाहिए। मर्द और औरत, गाड़ी के दो पहिये हैं। घर की गाड़ी को खींचने के लिए इन दोनों का साथ रहना जरूरी है। इसीलिए भारत में पहले यात्रा के लिए पति-पत्नी साथ निकलते थे। हर धर्म-कार्य भी साथ करते थे। साथ-साथ काम करने में पत्नी को प्रधानता दी जाती थी। 'सीताराम', 'राधा-कृष्ण' आदि जो हिन्दू बोलते हैं, उनमें पति से पहले पत्नी का ही नाम है।

नकल करने की आदत

बीच के समय में हमारे यहाँ नकल करने की आदत बहुत पड़ गयी। अंग्रेजों की नकल करके कोट, टाई, पतलून वगैरह पहनना शुरू किया। हमने गर्मी के समय पसीने से तर-बतर लोगों को कोट-टाई पहने देखा है। कैसी हालत है यह! राज की हजूरी करके रोटी कमानी पड़ती है, इसलिए पहले ऊँची जमात-वाले लोग ही गुलाम बनते हैं। फिर धीरे-धीरे दूसरे लोग भी वैसा ही करने लगते हैं। नकल करके भी यदि अच्छे रिवाज, अच्छे संस्कार ग्रहण करते तो कोई बात नहीं थी, पर अच्छाई तो लेते नहीं, बुराई ही जल्दी सीख लेते हैं। अंग्रेजों की तरह ही मुसलमानों से भी बुरी आदतें ले ली। मुसलमानों में परदे का रिवाज था तो यहाँ भी पर्दा रखना शुरू कर दिया। यह कोई रिवाज है? बहनों को पर्दे में रखना कौन अक्ल की बात है? अगर अब समाज इसी तरह बरतेगा तो यह आजादी टिकने-वाली नहीं है।

क्या अब भी बहनें अन्दर रहेंगी

दूसरे देशों में बहनें और भाई साथ-साथ काम करते हैं। अगर वे साथ काम न करें तो भाइयों की ताकत आधी रह जायगी। इस तरह आधी ताकत से कब तक काम चल सकता है? अब तो ईराक, मिश्र आदि देशों में भी पर्दा हट रहा है। सारी बहनें बाहर आकर काम करती हैं। आपको मालूम ही है कि इस समय कांग्रेस की प्रधान कौन हैं? इन्दिराजी जहाँ प्रधान है, वहाँ क्या बहनें अन्दर ही रहेंगी?

आप बहनों को नाटक, सिनेमा आदि में साथ ले जाते हैं। लेकिन बाबा का प्रवचन सुनने के लिए साथ नहीं लाते? इसमें कौन सी समझदारी की बात है? नाटक, सिनेमा में साथ न ले जायँ, यह तो समझ में आ सकता है, पर ज्ञान की बातें सुनने के लिए साथ न लायें, यह कैसे समझ में आ सकता है? आप अब अपने घर की बहनों को आगे आने दीजिये। आपके दायें हाथ की ओर कश्मीर है। हम अभी वहाँ होकर आये हैं। कश्मीर में हमने दो नाम सुने। (१) अल्ला और (२) लल्ला। लल्ला नाम की एक महान स्त्री ७०० साल पहले हुई। वह शैव धर्म को माननेवाली हिन्दू स्त्री थी। उसने भक्ति के जो भजन लिखे, उन भजनों को आज हिन्दू, मुसलमान आदि सभी प्रेम से गाते हैं। दूसरी ओर आपके बायें हाथ की तरफ राजस्थान है। राजस्थान में मीरा का नाम चलता है। मीरा के भजन भी घर-घर में गाये जाते हैं। आप राजस्थान और कश्मीर के बीच में हैं। क्या यहाँकी बहनें भक्ति और ज्ञान में पीछे रहेंगी?

बच्चों की भलाई के लिए माताएँ पढ़ें

अगर ये बहनें भलाई की बातें नहीं सुनेंगी तो समाज आगे नहीं बढ़ेगा। सिनेमा देखना, बीड़ी फूँकना आदि जो बुरे काम हैं, उनमें मर्दों की बराबरी करने की जरूरत नहीं है, परन्तु ज्ञान-ध्यान में अगर बहनें पीछे रह जायँगी तो समाज निस्तेज हो जायगा। बहनें बच्चों को सँभालती हैं। इसलिए वे जो सीखी हुई होंगी, वही बच्चे सीखेंगे। बच्चों की तरक्की के लिए भी बहनों को ज्ञान, ध्यान, मोक्ष और भलाई की बातें सुननी चाहिए।

• • •

www.vinoba.in

प्रार्थना-प्रवचन

भरुच (बम्बई राज्य) ४-१०-'५८

ग्राम-स्वराज्य से निर्णयशक्ति और विशुद्ध लोकतंत्र

बहुत वर्षों बाद यह सारा उत्साह अपने देश में देखने को मिलता है। स्वराज्य के बाद दस साल हुए, सर्वोदय, ग्रामदान और भूदान की सभाओं में जितना उत्साह देखने को मिलता है, उतना उत्साह हमने कहीं भी नहीं देखा। वैसे तात्कालिक प्रश्नों के लिए कहीं-कहीं लोग उत्साह बताते हैं, पर वह क्षणिक होता है। किन्तु सात-साढ़े सात साल से यही प्रश्न लेकर मैं देश में घूम रहा हूँ, सर्वत्र यही दर्शन और यही उत्साह देखने को मिला। आज की यह सभा बिहार की सभा का स्मरण दिलाती है। ठीक ऐसे ही उत्साह से बिहार में भी सभा होती थी। याने पाँच सालों में उत्साह कुछ कम नहीं हुआ, दिन-प्रतिदिन बढ़ ही है।

उत्साह से धृतिशक्ति पैदा करें

उत्साह वाष्प जैसी शक्ति है। अगर हम भाप की शक्ति यों ही बाहर जाने देंगे तो वह सारे आकाश में फैल जायगी, परंतु उसमें से कोई शक्ति प्रकट नहीं होगी। अगर हम उसे बाहर न जाने देंगे, दबा रखेंगे और काम में लायेंगे तो बड़ी शक्ति पैदा हो सकती है। इसी तरह उत्साह की बात है। उत्साह की बाढ़ आकर यों ही चली जाय तो हमने उस शक्ति का उपयोग न कर बहुत खोया, ऐसा ही अर्थ होगा। इसलिए उत्साह का उपयोग करने की शक्ति होनी चाहिए। यह "धृति" में होती है। गीता ने सिखाया है कि धृतिशील ही सात्त्विक कर्ता होता है। उत्साह को कायम रखने की शक्ति का नाम ही धृति है। इसलिए उत्साह में जो बाढ़ आती है, उसे कम नहीं होने देना चाहिए। किन्तु उसमें से धृतिशक्ति प्रकट करनी चाहिए। धृति याने उत्साह को काम में लगानेवाली शक्ति। अब राष्ट्र के सामने केवल सर्वोदय शब्द ही नहीं रहा है। मूल में यह शब्द था। अब इसका कार्यक्रम लोगों के सामने स्पष्ट तरीके से आ गया है। इस कार्यक्रम में सब लोगों के उत्साह का धृति और योजनापूर्वक योग्य निर्णय कर उपयोग किया जायगा तो उससे एक कल्याण-कारी शक्ति प्रकट होगी, इसमें सन्देह नहीं। यह शक्ति अब प्रकट हो भी रही है। यह अवतार होने की तैयारी ही चल रही है।

अवतार में भक्तों का आरोहण और भगवान का अवतरण

अवतार याने क्या? उसको कैसे पहचाना जायगा? जब मनुष्य का चित्त ऊपर उठता है, तभी भगवान नीचे उतरने लगता है। बीच में दोनों का मिलाप होता है। दोनों अपने-अपने स्थान पर रहें तो दोनों का मिलाप नहीं होगा। इसलिए भगवान को जरा नीचे आना चाहिए और भक्त को थोड़ा ऊपर उठना चाहिए। इसीका नाम अवतार है। इसलिए जब आबाल-वृद्ध सभी लोगों की भावना उन्नत होगी और उन्हें तीव्रता के साथ यह अनुभव होने लगेगा कि कुछ-न-कुछ करना चाहिए, उसके बिना समाधान नहीं हो सकता, तभी कहा जायगा कि उनका, भक्तों का आरोहण हो रहा है। अवतार में भक्त के आरोहण और भगवान के अवतरण, दोनों शक्तियों का योग होता है। भगवान के अवतरण का लक्षण ही है कि भगवान की कृपा नीचे आना चाहती है और सबका हृदय उत्साहित हो जाता है। सबको यह आकांक्षा होनी चाहिए कि कुछ-न-कुछ नया हो। इसके लिए धृतिपूर्वक योजना करने की जरूरत होती है और वैसा कार्यक्रम आज मिल गया है।

शीघ्र निर्णय-शक्ति आज का सबसे बड़ा गुण

आज सुबह मैं बात करता था कि इस जमाने में सबसे श्रेष्ठ गुण कौन-सा है, इसका निर्णय करना कठिन है। क्योंकि कभी लगता है कि यह गुण श्रेष्ठ है तो कभी लगता है, वह गुण श्रेष्ठ है। लेकिन सभी दृष्टियों से देखा जाय तो निर्णय-शक्ति आज के जमाने का सबसे श्रेष्ठ गुण कहा जायगा, क्योंकि आज के विज्ञानयुग में बड़े-बड़े सवाल उत्पन्न होते हैं और उनका निर्णय तुरन्त ही करना पड़ता है। सवाल छोटा या बड़ा होने पर भी उनके निर्णय के लिए आज चिन्तन-मनन का तनिक भी अवकाश नहीं है।

गोवा का सवाल छोटा है या बड़ा? छोटा-सा गोवा प्रदेश, उसका सवाल पुराने युग में तो कोई भी नहीं जानता था, परन्तु अब वह छोटा सवाल नहीं रहा। आज वह अन्तर्राष्ट्रीय सवाल हो गया है। आज कोई भी सवाल बड़ा हो जाता है। विज्ञानयुग के सन्दर्भ में छोटे सवाल छोटे रहते ही नहीं, याने वे विश्वव्यापक रूप धारण करते हैं। विश्वरूप धारण करनेवाले सवालों का निर्णय तुरन्त करने की जरूरत होती है। इसलिए मनुष्य के मन और बुद्धि पर दोनों तरह से हमला होता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य को निर्णय-शक्ति मिलेगी, तभी उसका रक्षण होगा, नहीं तो मनुष्य डूब जायगा। कारण हाथ में जो शस्त्रास्त्र आये हैं, भस्मासुर की तरह किसी दिन वे अपने ही हाथों खुद को खत्म कर देंगे। इसलिए अगर मनुष्य का दिमाग स्थिर न हो और वह मन से उपर उठने की वृत्ति प्राप्त न करे, मन के पचड़े में ही डूब जाय तो निर्णय न हो सकेगा। उसके निर्णय में गड़बड़ हो जायगी।

अब जीर्ण-शीर्ण मन से चिपके रहना ठीक नहीं

गत दस वर्षों में अल्जीरिया, गोवा पाकिस्तान, मध्यपूर्व इण्डोनेशिया आदि देशों में कितने सवाल पैदा हुए! पर अब तक एक का भी फैसला न हुआ। एक के बाद एक नया सवाल खड़ा हो जाता है और पुराने सवाल उलझे ही रहते हैं। सर्वत्र विचार-चक्र चलता है। उसका एकमात्र कारण मनुष्य अपने मन-क्षेत्र से चिपका रहता है, यह है। विज्ञानयुग में जो लोग इस जीर्ण-शीर्ण मन से चिपके रहने का आग्रह रखेंगे, वे मन के साथ ही डूबेंगे। विज्ञान सदा वस्तु का वास्तविक रूप देखता है, काल्पनिक रूप नहीं। इस तरह आज मन पर दुहरा हमला हो रहा है। वेदान्त या तत्त्वज्ञान प्राचीनकाल से ही मन पर हमला करता आया है। वह कहता है कि "मन पर काबू पाओ, मन का स्थान गौण है, उसके ऊपर बुद्धि और बुद्धि के उपर आत्मा है। मन से अलग होकर उसे पहचानो और उसका योग्य उपयोग करो।" मन से जब हम यह शक्ति प्राप्त करेंगे, तभी संसार-सागर से तरेंगे, नहीं तो डूब जायँगे। किन्तु आज तो दूसरी ओर से विज्ञान का भी उसपर हमला शुरू हो गया है। विज्ञान कहता है कि "रे मन, तू यहाँसे हट जा।" विज्ञान मन को बाह्य क्षेत्र में नहीं मानता और आत्मज्ञान उसे अन्तःक्षेत्र में आने की मनाही करता है। वह अन्दर नहीं आने देता तो यह बाहर नहीं रहने देता। इस तरह आज दुहरी मार से मन मर रहा है। अतः हमें दूसरी तरह चिन्तन करना चाहिए, तभी निर्णय हो सकेगा।

आज लोकतंत्र कैसे बचेगा ?

आज के सभी कूटनीतिज्ञ प्राचीन जमाने के परिणाम हैं, नये जमाने के कर्ता नहीं। इसलिए अब वे इस जमाने में क्या काम आयेंगे ? किन्तु वे ही लोग चुनाव में चुन आते हैं। चुनाव में औसत लोग ही चुन आते हैं। चुनाव में अत्युत्तम मनुष्य के चुन आने की संभावना ही नहीं है। इसलिए कोई अत्युत्कृष्ट बुद्धिमत्ता दिखायेगा और समाज को संकट से मुक्त करेगा, यह संभव नहीं। जिस बुद्धि से यह संकट पैदा हुआ है, उसी बुद्धि से चुने लोग इस संकट का परिहार करने में कैसे समर्थ होंगे ? अगर कोई इनसे भिन्न ऐसा व्यक्ति हो, जो भिन्न मन रखता हो, तटस्थ दृष्टि से देखता हो, खेल से अलग रहकर खेल की परीक्षा कर सके और उसमें कोई अकल हो तो भले ही हम लोकशाही का राज्य-कारबार चलाने के लिए औसतन अच्छे को चुनें। किंतु कठिन सवाल आने पर इन सबसे अलग उस विज्ञानी, आत्मज्ञानी और मन से उपर उठे मनुष्य के पास जाकर उसकी सलाह से काम करें तो लोकशाही बचेगी। अन्यथा लोकशाही अपना बचाव करने के लिए सर्वथा असमर्थ सिद्ध होगी। यह सारा मैं आपसे इसलिए कह रहा हूँ कि आप सब उस प्राचीन नगरी के नागरिक हैं, जहाँ भृगु ऋषि ने नर्मदा के किनारे तपस्या की है। आप लोगों की बुद्धि में प्रतिभा है और विचार समझने की प्रवीणता है। यही समझकर मैं आज के जमाने का यह दुःख आपके सामने रख रहा हूँ।

नेता वही, जो फैलाकर समेट भी पाये

आज के लोकतंत्र में ५१ के विरुद्ध ४९—इस तरह चुनाव होते हैं। चुने हुए व्यक्ति को वास्तव में ५१ का ही समर्थन प्राप्त रहता है, पर शासन १०० पर करना पड़ता है। वे ५१ भी सभी बुद्धिमान ही होते हैं, ऐसी बात नहीं। उसे सदा लोगों के बल की जरूरत पड़ती है। फलतः जैसे उसके मतदाता कहते हैं, तदनुसार उसे चलना पड़ता है। याने चुन आने के बाद वह उनका नेता न रहकर सेवक बन जाता है। मतदाताओं का आदेश उसके लिए शिरोधार्य हो जाता है। उसके शिर पर भगवान नहीं, मतदाता बैठे रहते हैं। इसलिए उनकी तरफ देखकर ही उसे चलना पड़ता है।

गांधीजी की कैसे स्थिति थी ? वे कहते थे कि मेरे अंतर में एक देव है, वह कहेगा, वैसा ही मैं करूँगा। बारडोली के सत्याग्रह के समय चौरीचौरा का दंगा हुआ तो गांधीजी ने प्रस्ताव किया कि असहकार-आंदोलन वापस लेना चाहिए। उस समय सारे अखबारों ने उसकी निन्दा की, पर गांधीजी अडिग रहे। उन्होंने कहा—"मेरा हृदय मुझे जो कहेगा, वही मैं करूँगा।" उन्होंने आन्दोलन पीछे लिया, यह उनकी शक्ति थी। किसी चीज को फैलाना हो तो वे फैला सकते थे और फिर रोक भी सकते थे। किन्तु आज के नेता फैलाना तो जानते हैं, परन्तु एक बार फैलाने के बाद उसीमें फँस जाते हैं। उसमें से छुटकारा पाना नहीं जानते। यह नेता का लक्षण नहीं है। गांधीजी में यह लक्षण था।

ऋग्वेद में एक वर्णन आता है। सूर्य नारायण सुबह अपनी किरणें फैलाता और शाम को एकदम पीछे खींच लेता है। "तत् सूर्यस्य देवत्वं, तत् महित्वं, मध्या कर्तोः जिततं संजमार।" सूर्य का देवत्व, सूर्य की महिमा इसीमें है कि वह अपनी किरणजाल एकदम चारों ओर फैलाता और शाम को एकदम समेट लेने की शक्ति प्रकट करता है। यह दुहरी शक्ति जो उसमें है, यही नेता का लक्षण है।

www.vinoba.in

आज देश में ऐसा नेतृत्व नहीं

ऐसा नेतृत्व आज देश में नहीं है। यहाँ अनेक लोकमान्य नेता हैं, पर उनके ऊपर-नीचे चारों ओर बंधन है। रामायण में रामजी का वर्णन आता है। आज रामजी का राज्याभिषेक होगा। सर्वत्र आनंद का वातावरण छाया है। राज्याभिषेक का काम चालू है। किन्तु एकदम संकट आता है और निर्णय हो जाता है कि रामजी को जंगल में जाना है। यह सुनकर रामजी को कितना आनन्द होता है, इसका वर्णन तुलसीदासजी ने किया है :

"नव गयंद रघुबीर-मनि, राजु अलान समान।
छूट जानि वन गवनु सुनि, उर अनंदु अधिकान॥"

अर्थात् रघुबीरमणि एक नवगजेन्द्र जैसे थे। जिस तरह नवगजेन्द्र की जंजीर छूट जाने पर वह छलांग मार जंगल में चला जाता है, इसी तरह रामचन्द्र अत्यन्त हर्षित हो, यह कहकर कि "मैं मुक्त हो गया, छूट गया", वन के लिए निकल पड़े। जंगल के उन्मुक्त प्राणी को वे लोग राज्य की जंजीर में बाँध रखना चाहते थे, परंतु जब उसमें से छूटने का तय हुआ तो वह अत्यन्त आनन्दित होकर, छलांग मारकर निकल पड़ा।

सत्ता का यह मोह

अभी बीच में पण्डित नेहरू को श्रीरामचन्द्रजी का यही नाटक करना सूझा। उन्हें लगा कि रामचन्द्रजी १४ साल वन गये तो मुझे भी थोड़े दिन जंगल में जाना चाहिए। अगर मैं जंगल में जाऊँ तो अच्छा रहेगा। इस जंजाल से बाहर रहूँगा। इसलिए उन्होंने लोगों से विनती की। किन्तु जिनसे विनती की, उनकी बड़ी दयनीय दशा हुई। उन्हें लगा कि अगर हम इन्हें जाने देंगे तो हमारा अपना शासन स्थिर कैसे रहेगा ? इसलिए उन सबने मिलकर पण्डितजी को समझाया कि आप भी रहिये और हमें भी रहने दीजिये। आपकी राज्य को अत्यावश्यकता है। अगर वे ऐसा कहते कि "हम जानते हैं कि कुछ शक्तिशाली लोगों को राज्यव्यवस्था से बाहर रहना चाहिए। इसलिए आप यहीं रहिये और हम बाहर जाते हैं।" तो उसका कुछ अर्थ होता। किन्तु वे कहते हैं कि "सत्ता का मोह नहीं होना चाहिए।" पर खुद उसमें फँसते हैं तो उनकी बातें हास्यास्पद हो जाती हैं। फिर उन्हें दुःख होता है। इस तरह आज बड़े-बड़े आदरणीय पुरुष भी ऐसे जाल में फँसे हैं। आज कोई भी शक्तिशाली वह स्थान छोड़ने की शक्ति, कोई भी बुद्धिशाली वह स्थान छोड़ने की बुद्धि नहीं रखता। इसका कारण औसत बुद्धि है।

सर्वोदय-योजना ही उपाय

मैं कहना चाहता था कि आज के जमाने में सबसे आवश्यक गुण-निर्णय शक्ति है। जिनमें यह गुण है, वे चुनाव में चुने नहीं गये, यह निश्चित है। आज के जमाने में निर्णय करना हो तो मन से ऊपर उठकर करना होगा। ऐसी शक्ति रखनेवाले मनुष्य ही चुनाव में चुने जाने चाहिए। अगर वैसा नहीं है तो सोचना होगा कि दूसरा रास्ता कौन सा है ? मुझे एक रास्ता सूझा है। अगर वह आपको जँचे तो उसे स्वीकार कीजिये। जहाँ बड़ा सवाल नहीं है, वहाँ छोटा सा सवाल लेकर उसे हल करने के लिए लोगों में निर्णय-शक्ति होनी चाहिए। इसीलिए ग्रामस्वराज्य करना चाहिए। इससे गाँव में वे सब सवाल पैदा होंगे, जो दिल्ली में होते हैं। अगर हम उन छोटे-छोटे सवालों को अपनी निर्णय-शक्ति से स्वयं सुलझा सकें, लोग गाँव-गाँव का कारोबार

अपने हाथ में लें, खूब चिन्तन, मनन करें और खुद योजना करें तो गाँव-गाँव में निर्णय-शक्ति आयेगी। छोटे-छोटे सवालों में यह शक्ति आयेगी तो आगे चलकर हम बड़े-बड़े सवालों को भी निर्णय-शक्ति से हल कर सकेंगे। इसके लिए सच्ची लोकशाही लानी चाहिए। सारा राज्ययन्त्र विकेन्द्रित करना चाहिए। गाँव-गाँव में लोग अपना-अपना कारोबार अपने निर्णय से करें, इसे ही मैं सर्वोदय-योजना कहता हूँ।

यह विषय ऐसा है कि बोलते समय मुझे थकान ही नहीं आती। किन्तु अभी सूर्यनारायण अपनी किरणें समेट रहा है, इसलिए मैं भी इसे समेट लेता हूँ। मेरी योजना यह है कि गाँव-गाँव का ग्रामदान हो जाय। इसका अर्थ यह नहीं कि सब मजदूर बनेंगे और सामुदायिक खेती होगी। ग्रामदान याने गाँव की जिम्मेदारी गाँव के लोग उठा लें। जमीन की मालकियत ग्रामसभा की है। गाँव की सब जनता मिलकर सोचे और निर्णय करे कि अपने गाँव के भूमिहीनों को जमीन या काम देंगे और भूखे न मरने देंगे। मैं यह नहीं कहना चाहता कि जमीन ही दें। ग्रामोद्योग दें तो भी चलेगा। किन्तु गाँव में विषमता रहेगी तो ग्राम-स्वराज्य न होगा।

ग्रामदान के बाद ही ग्रामपंचायतों से लाभ

अभी गाँव-गाँव में ग्रामपंचायतें हैं। मैं हमेशा कहता हूँ कि जैसे चावल पकाने के लिए एक क्रम होता है। अग्नि, बरतन, पानी और आखिर में चावल। इससे उल्टा करेंगे, याने क्रम बदल देंगे तो चावल नहीं बनेगा। ऐसे ही जब जमीन की मालकियत मिटाकर, विषमता हटाकर हम मजबूत नींव बनायेंगे, तभी उसपर ग्राम-पंचायत की मजबूत इमारत खड़ी हो सकती है। आज होता यह है कि जिसके हाथ में ज्यादा जमीन है, ज्यादा पैसा है, जो ज्यादा पढ़ा-लिखा है और सरकार में जिसका ज्यादा वजन है, ऐसे लोगों के हाथ में ग्राम-पंचायत याने गाँव की सत्ता सौंपी जाती है। इसे मैं "विकेंद्रित शोषण-योजना" कहता हूँ। इसका इलाज यही है कि पहले ग्रामदान हो और उसके आधार पर ग्राम-स्वराज्य की इमारत खड़ी की जाय। इससे गाँव-गाँव में निर्णयशक्ति आयेगी। फिर जिनके पास निर्णयशक्ति है, ऐसे मनुष्य ही चुनकर आयेंगे और आज की लोकशाही में जो खामी है, कमी है, वह दूर होगी। यही मेरी योजना है।

साढ़े तीन हजार शान्तिसैनिकों की माँग

जब तक हम यह व्यवस्था नहीं कर सकेंगे, तब तक हिन्दुस्तान में बहुत से सवाल सताते रहेंगे। आज भी हिन्दुस्तान में जहाँ-तहाँ दंगा होता है। इसके लिए देश-व्यापी शान्तिसेना खड़ी करनी है। गुजरात से मुझे तीन-साढ़े तीन हजार सैनिक चाहिए। जो "नित सेवा, नित कीर्तन" और वक्त आने पर "शिर साटे नटवरने वरिये" ऐसी दुहरी भक्ति करनी है। साधारण समय में भक्ति और सेवा करेंगे और विशेष प्रसंग पर अपनी जान को खतरे में डालेंगे। ऐसी शान्तिसेना देश में होनी ही चाहिए। मुझे बहुत खुशी होती है कि सूरत जिले में तीस लोगों ने शान्तिसेना में नाम दिये हैं। गुजरात में यह संख्या तीन-साढ़े तीन हजार की होनी चाहिए।

सर्वोदय-पात्र की योजना चलायें

इस शान्तिसेना के लिए लोक-सम्मति चाहिए। उसके लिए सर्वोदय-पात्र की योजना बनायी है। जो भी आप खाते हैं, वह नियमित रूप से बच्चे के हाथ से पात्र में डाला जाय। उससे बच्चों को शिक्षण मिलेगा, राष्ट्र-सेवा और राष्ट्र रक्षण के लिए लोक-सम्मति मिलेगी। अन्तर्गत शान्ति रहेगी तो सरकार की शक्ति बढ़ेगी। देश में आज जो सेना पर खर्च हो रहा है, वह कम होगा और उससे गरीबों का दुःख दूर होगा। बचा हुआ पैसा उनकी सेवा के काम आयेगा। फिर इसका नैतिक असर दुनिया पर होगा और दुनिया में भी शान्ति-शक्ति और निर्भयता बढ़ेगी। तभी अहिंसा, सर्वोदय और गांधी-विचार की प्रतिष्ठा होगी। जब तक यह नहीं होता, तब तक गांधी-विचार, अहिंसा और सर्वोदय-विचार की सतत अप्रतिष्ठा जो चल रही है, उसे मैं देख रहा हूँ और आप भी देख ही रहे हैं। ● ● ●

सूरत जिला कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच

कठौर (सूरत) ३०-९-'५८

कांग्रेसजन अब त्यागमय भूदान-कार्य करें

कांग्रेस का इतिहास हमारे देश के लिए एक अभिमान-स्थान है। याने जिस तरह कांग्रेस का विकास हुआ, वह कुल इतिहास हमारे लिए बहुत ही उत्तम स्मरण है, क्योंकि कांग्रेस का आरम्भ ऐसे पुरुषों द्वारा हुआ, जो कोई भी राजनैतिक विचार जनता के सामने रखने के पहले बहुत सारा समाज-सुधार का कार्य कर चुके थे। यह एक अद्भुत ही वस्तु है, जिसका दुनिया के स्वतंत्रता-संग्राम के इतिहास में अपना एक स्थान है। किन्तु उसका भान हमें नहीं हुआ है।

परतंत्रता में आत्मसंशोधन अद्भुत बात

कोई भी देश जब परतंत्र होता है तो उसकी दो तरह की प्रवृत्तियाँ होती हैं। या तो उस देश के लोग गुलामी में पड़कर दब जाते हैं, चूँ नहीं करते, उन्हें कुछ सूझता ही नहीं कि क्या करनी चाहिए, जड़ प्रेतवत् बन जाते हैं या बलवा शुरू कर देते हैं, किसी न किसी प्रकार की कहीं न कहीं कुछ न कुछ बगावत खड़ी कर देते हैं। किन्तु हिन्दुस्तान में जब अंग्रेजों की हुकूमत कायम हुई तो इन दोनों में से एक भी प्रक्रिया नहीं हुई, बल्कि तीसरी ही प्रक्रिया चली। हमारे चिन्तन करनेवाले पुराने नेताओं ने आत्म-संशोधन शुरू किया। उन चिन्तनशील नेताओं, महापुरुषों को लगा कि जब अति दूर की एक जमात ने यहाँ आकर अपना आसन जमा लिया तो हमें उससे बहुत कुछ सीखना है। हममें जो दोष हैं, उनका निरीक्षण, परीक्षण, समीक्षण, निराकरण एवं संशोधन होना ही चाहिए। इसलिए धर्म-सुधार, समाज-सुधार, आध्यात्मिक विचार-सुधार शुरू हुए। राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती, न्यायमूर्ति रानडे आदि असंख्य लोगों ने समाज, धर्म आदि में सुधार की बात सोची। इतना ही नहीं,

www.vinoba.in

बल्कि उन्होंने यह भी सोचा कि हमारे भक्तिविचार, तत्त्व-विचार में कुछ न कुछ गलती होगी, हमारे मन में, चित्त में कुछ न कुछ दोष पैठे होंगे। इस तरह उन्होंने आत्म-संशोधन ही शुरू किया। न तो वे हीन बने, न किसी तरह संताप-वश बगावत करने पर उतारू हुए। उन्होंने विचार में संशोधन किया और दुनिया के विचार में वृद्धि की।

परतंत्र भारत की देन : तीन प्रमुख विचार

वास्तव में उन दिनों हमारी बुद्धि स्वतन्त्र रहेगी, ऐसी कोई अपेक्षा ही नहीं थी। परतन्त्र देश में स्वतन्त्र बुद्धि का होना अपेक्षित नहीं। फिर ऐसी बुद्धि का होना तो बिलकुल ही अनपेक्षित है, जिसका परिणाम दुनिया पर पड़े और दुनिया के सामूहिक विचारों में नये विचार प्राप्त हों। लेकिन परतन्त्र हिन्दुस्तान की स्वतन्त्र बुद्धिमत्ता से दुनिया को जो नये विचार मिले, उनमें तीन प्रमुख विचार हैं।

पहला विचार : सर्वधर्म समन्वय

१–सब धर्मों का समन्वय शाब्दिक नहीं, अनुभवात्मक हो। रामकृष्ण परमहंस ने यह विचार दुनिया को दिया। वैसे तो दुनिया में बोलनेवाले बोलते और लिखनेवाले लिखते हैं कि सब धर्मों में अच्छाई पड़ी है। किन्तु विभिन्न धर्मों की उपासनाओं का अत्यन्त तटस्थ बुद्धि एवं पूर्ण प्रेम से अनुभव कर, उनके मूल में पहुँचकर रामकृष्ण ने आत्मा का निर्णय जाहिर किया कि मूल में एकत्व है, अद्वैत है। यह जाहिर करना बहुत बड़ी देन है। पिछले साल जब मैं केरल में यात्रा कर रहा था, तब वहाँके लोगों ने बहुत प्यार से हमारा स्वागत किया। वहाँके चारों ईसाई चर्चों ने यह जाहिर किया कि यह मनुष्य ईसामसीह का काम कर रहा है। इसलिए सब ईसाइयों को विनोबा के काम में सहयोग देना चाहिए। यह जाहिर करने के बावजूद जब उनके साथ बातें करने का मौका आया तो मैंने देखा कि सर्व-धर्म-समभाव उनकी समझ में ही नहीं आता था। ईसा के धर्म में एक विशेषता है और उसे कबूल किये बिना दुनिया का निस्तार नहीं। ऐसी बातें उन्होंने खानगी चर्चा में कहीं। इस हालत में सभी धर्मों की उपासनों का अनुभव कर एक अनुभवात्मक निर्णय जाहिर करना बहुत बड़ी बात है।

दूसरा विचार मन से ऊपर उठना

२—दूसरा विचार श्री अरविन्द का है। मैं इन दिनों बार-बार उसी विचार को दुहराता हूँ, क्योंकि मैं मानता हूँ कि विज्ञान-युग में वही विचार टिकेगा, दूसरा नहीं। जब तक हम इस छोटे से मन से उपर नहीं उठते हैं और ऊपर उठकर परमात्मरस का सेवन कर नीचे सेवा के लिए नहीं आते हैं, तब तक दुनिया की असली सेवा नहीं कर सकते। श्री अरविन्द ने यह विचार दुनिया को दिया है। वैसे तो मन को निर्मूल करने की बात आज तक चलती आ रही है। योगियों ने उसकी कोशिश भी की है। फिर भी सामाजिक शास्त्र की प्रगति के लिए यह जरूरी है कि सारा का सारा मानव-समाज मन के ऊपर उठने की कोशिश करे। इस प्रकार कोशिश होगी, तभी मानव-जाति का उद्धार होगा, यह बात श्री अरविन्द ने कही।

मैं पन्द्रह-बीस साल से यह कहता आया हूँ, लेकिन अभी ज्यादा जोर देकर कहता हूँ कि इस विज्ञान युग में पुराना मन हरगिज नहीं चलेगा। छोटे-छोटे मन से जो विचार होते हैं, छोटे मन से विचार करनेवाले राजनीतिज्ञ राष्ट्र का कारोबार चलाते हैं, जिनमें छोटी बुद्धि काम करती है, वे अत्यन्त खतरनाक हैं। यद्यपि नाना फड़नवीस अपने जमाने का एक श्रेष्ठ कूटनीतिज्ञ था, तो भी अब उसकी नहीं चलेगी। अब यह सारा बिलकुल नीरस हो गया है। फिर भी कूटनीतिज्ञ अभी भी वही पुरानी नीति चला रहे हैं। उसका परिणाम यह होता है कि देशों के बीच खाई बढ़ती जाती है। ऐसे दो देश बताना मुश्किल है, जिनके बीच हार्दिक मिलन हो। इस सारी पुरानी डिप्लोमेसी से दुनिया का निस्तार नहीं होगा। क्योंकि विज्ञानयुग में अब हमें मन और मानसिक विचारों को तटस्थता से देखना होगा। जैसे हम अपनी घड़ी को देखते और उससे खुद को बिलकुल अलग महसूस करते हैं, वैसे ही अपने मन को अपने से बिलकुल अलग देखना चाहिए। अगर मेरी घड़ी दो मिनट पीछे रहती है तो मैं उसके उस दोष को पहचानता हूँ और हर रोज उसे दो मिनट आगे कर देता हूँ। वैसे ही अपने मन के गुण-दोषों से खुद को अलग पहचानना होगा। जब तक हम दूसरों के गुण-दोषों की तरह ही अपने मन के गुण-दोषों से खुद को अलग नहीं समझेंगे, तब तक हम थर्मामीटर के जैसे नहीं बनेंगे। थर्मामीटर को अपना बुखार नहीं होता, इसीलिए वह दुनिया का बुखार नाप सकता है। विकारयुक्त मन को लेकर हम दूसरों के विचारों का अन्दाजा लेने जायँगे तो सही अन्दाजा नहीं मिलेगा। जो उपाय हम करेंगे, वे भी सही उपाय न होंगे और उनसे दुनिया का दुःख-निस्तार नहीं होगा—यह एक बुलन्द विचार भारत ने दुनिया को दिया।

तीसरा विचार : सत्याग्रह

३—जब तक हम परस्पर विरोधी बातों का बाह्य उपाय याने युद्ध आदि की बातें सोचेंगे, तब तक दुनिया का निस्तार नहीं होगा। इसलिए सत्याग्रह की आवश्यकता है। यह गांधीजी का विचार है। ये तीनों विचार परतन्त्र हिन्दुस्तान की बुद्धिमत्ता से निकली स्वतन्त्र चीजें हैं।

कांग्रेस की पृष्ठभूमि पर ध्यान दें

यही सारा आध्यात्मिक चिन्तन कांग्रेस की पृष्ठभूमि में था। उसके बिना कांग्रेस पैदा हो ही नहीं सकती थी। जो यह मानते हैं कि १९ वीं शताब्दी के अन्त में कांग्रेस पैदा हुई और कुछ चन्द लोग उसके पीछे थे, जिन्होंने कुछ दुःख मिटाने के लिए कांग्रेस की स्थापना की और फिर उसमें से धीरे-धीरे विकसित होकर हम स्वराज्य-प्राप्ति तक पहुँचे, उन्हें कांग्रेस मालूम भी नहीं होगी। मैंने अभी जो पृष्ठभूमि रखी, उस दृष्टि से मैं कांग्रेस की तरफ देखता हूँ। स्वराज्य-प्राप्ति के प्रयत्न में उज्ज्वल तारों की तरह चमकनेवाले कम-से-कम चार महनीय नाम हैं। दादाभाई नौरोजी, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी और पण्डित जवाहर-लाल नेहरू। ये एक के बाद एक ऐसे नाम हैं, जिनके दिमाग में स्वतन्त्र बुद्धिमत्ता, विश्व-प्रेम और आध्यात्मिक वृत्ति है और साथ ही भारत की आजादी की तमन्ना है। यह सारा कांग्रेस का इतिहास ध्यान में रखना चाहिए।

गांधीजी के अन्तिम निराशाभरे बोल

अब स्वराज्य प्राप्त हुआ है। जब आजादी हुई, उस वक्त बापू का क्या हाल हुआ, यह सब आप प्यारेलालजी के महा-भारत में देखिये। उन्होंने गांधीजी के जीवन का शान्तिपर्व और स्वर्गारोहण पर्व लिखा है, जो सबको पढ़ना चाहिए। जोसेफ मैजिनी ने देश की आजादी की कोशिश की और उसके तथा ग्यारीबाल्डी के प्रयत्नों से इटली स्वतन्त्र हुआ। वे

स्वतन्त्र इटली के अधिष्ठाता बन गये। लेकिन मैजिनी के चेहरे पर उत्साह नहीं था। उसने कहा कि जिस इटली का मैं ध्यान करता था, वह इटली यह नहीं, जो आज बन रही है। मेरी इटली वह थी, जो दुनिया की स्वतन्त्रता-प्राप्ति के काम में मदद करती। मैजिनी की मृत्यु अत्यन्त असन्तुष्ट अवस्था में हुई। हमने भी देखा कि जिस इटली के स्वातन्त्र्यगीत हम लोग गाते थे, वही इटली देखते-देखते साम्राज्यवादी देश बन गया। जबतक स्वातंत्र्य प्राप्त नहीं हुआ था, तबतक का वह स्वातन्त्र्य प्रेमी देश था, पर बाद में धीरे-धीरे वह एक सैनिक देश बन गया और आखिर फासिज्म वहीं पैदा हुआ। ठीक यही दशा आप गांधीजी की भी देखेंगे। गुजरात के कांग्रेसवाले गांधीजी के ज्यादा नजदीक थे, इसलिए वे अंदर से देखते होंगे, ऐसी मुझे आशा है। गांधीजी आखिरी दिनों में अत्यन्त असंतुष्ट, पीड़ित और दुःखी थे। वे कहते थे कि जिन-जिन मूल्यों के लिए मैंने कोशिश की, करीब-करीब वे सभी खत्म हो रहे हैं। यह नहीं कि उनमें से एक मूल्य भी दर्शन दे रहा है, कुल के कुल मूल्य टूट रहे हैं। आपने यह भी देखा कि जिस दिन स्वातंत्र्य-प्राप्ति का उत्सव मनाने के लिए सारे हिन्दुस्तान में रोशनी की गयी थी, उस दिन गांधीजी के स्थान में रोशनी नहीं थी। वहाँ तपस्या थी। वे कहते थे कि यह आत्मसंशोधन का दिन है। उस वक्त वे ऐसे दूर के स्थान में थे, जहाँ उनको तीव्र वेदना थी। जिस गांधी का नाम लेकर लाखों लोगों ने त्याग किया, उन्हें आखिर के दिनों में महर्षि व्यास जैसा बोलना पड़ा। भगवान व्यास ने महाभारत लिखा। उसमें वे नहीं बोलते, लेकिन आखिर भारतसावित्री में, जो महाभारत का निचोड़ है, उन्होंने कहा "ऊर्ध्वबाहुः विरौम्येषः न च कश्चित् शृणोति मां।" मैं हाथ उठाकर चिल्ला रहा हूँ, लेकिन कोई सुनता नहीं। ठीक यही भाषा गांधीजी के मुँह से निकली। वह सारा दुःखदायक इतिहास प्यारेलालजी की उस अप्रतिम किताब में पढ़ने को मिलेगा।

"लोक सेवक संघ" की कल्पना औपनिषदिक दर्शन

गांधीजी ने एक आशीर्वाद दिया था, जिससे कांग्रेस युग-युग जी सकती थी। वे कांग्रेस को ऐसा बनाना चाहते थे कि वह अमर हो। उन्होंने लोक सेवक संघ का विचार रखा और कहा कि कुल भारत में फैली हुई कांग्रेस सेवा-कार्य में लग जाय और उसकी नैतिक शक्ति का असर राज्यसत्ता पर रहे। किन्तु हमारे चित्त उस समय ऐसी एक विशाल अतिदिव्य भव्य कल्पना हजम करने लायक नहीं थे और शायद आज भी नहीं हैं। इतिहासकार लिखेंगे कि गांधीजी नहीं चाहते थे कि कांग्रेस की हालत "क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशंति" जैसी हो। वे चाहते थे कि कांग्रेस उज्ज्वल, दुनिया को बचानेवाला एक तारक नाम रहे, जिससे भारत और दुनिया बच जाय। रूप से नाम बड़ा होता है। रामायण में यह विचार बड़ा सुन्दर समझाया है। राम का रूप छोटा-सा था। उसने शबरी, गीध आदि कुछ ही भक्तों को उठाया। परन्तु रामनाम ने असंख्य भक्तों को उठाया। इसलिए राम से नाम बड़ा है। इसी तरह वे कांग्रेस का "रूप" मिटाकर "नाम" बढ़ाना चाहते थे। उनकी यह कल्पना एक अत्यन्त श्रेष्ठ कल्पना थी, जिसमें उनकी प्रतिभा चमक उठी थी। उसी प्रतिभा ने उन्हें "लोक सेवक संघ" की बात सुझायी। मुझे तो उस कल्पना का चिन्तन करते हुए लगता है कि वह उपनिषद् का-सा दर्शन है।

चर्मचक्षुओं को दिव्यदर्शन न होना दोष नहीं

हमारे नेताओं को लगा कि उससे देश तितर-बितर हो जायगा। कांग्रेस नहीं रहेगी तो न मालूम सत्ता पर किसकी पकड़ रहेगी, नवप्राप्त सत्ता टूट-फूट जायगी। यही सोचकर उन्होंने गांधीजी का वह सुझाव नहीं माना। मैं उन्हें दोष नहीं देता। जिस स्तर पर वे सोचते थे, उस स्तर पर वह ठीक ही था। एक दिव्य दर्शन होता है और दूसरा चर्मचक्षु का दर्शन। चर्मचक्षु के दर्शन से उन नेताओं ने जो सोचा, वह ठीक ही था, इसलिए मैं उन्हें दोष नहीं देता हूँ। फिर भी मानता हूँ कि अब कांग्रेस के लिए सोचने का समय आया है कि क्या कांग्रेस चुनाव की संस्था (इलेक्शनीअरिंग बाडी) ही बनी रहेगी?

क्या कांग्रेस चुनाव-संस्था ही बनेगी?

तीन साल पहले कांग्रेसवालों ने बड़े प्रेम से ब्रह्मपुरी में मेरी उपस्थिति में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक बुलायी थी। उस वक्त मैंने यह सवाल कार्यसमिति के सामने यह कहकर रखा था कि हम सब उसपर सोचें। मैं जब कांग्रेसवालों से बोलता हूँ तो कांग्रेस के साथ एकरूप होकर बोलता हूँ। यद्यपि सन् १९२६ से मैं कांग्रेस का सदस्य नहीं हूँ और सन् १९४२ से किसी रचनात्मक संस्था का भी सदस्य नहीं हूँ। इस तरह यद्यपि मैं संस्था-मुक्त हूँ, फिर भी कांग्रेस की भूत-भव्य दृष्टि मेरे दिल को खींचती है। इसलिए जब मैं बोलता हूँ तो उन्हींमें से एक हूँ, ऐसा मुझे लगता है।

मैंने उस वक्त कहा था कि जिस तरह व्याकरण में भूत, भविष्य और वर्तमान, तीन ही काल होते हैं, पाणिनि के पास चौथा काल नहीं है। वैसे ही कांग्रेसवालों के लिए तीन ही काल हैं—इलेक्शन पीरियड, प्री इलेक्शन पीरियड और पोस्ट इलेक्शन पीरियड। इसी तरह तीन काल बन जाय और जहाँ एक चुनाव खत्म हो, वहाँ दूसरा आता है। आश्चर्य है कि इस हालत में भी कांग्रेसवालों से आशा रखते हैं और उसके नेता भी कहते हैं कि तुम्हें रचनात्मक काम करना चाहिए। बेचारे करते भी हैं तो उनपर आक्षेप किया जाता है कि वे बहुत कम काम करते हैं। लेकिन मैं कहता हूँ कि आपने अभी जिस प्रकार से कांग्रेस बनायी है, इस प्रकार कांग्रेसवाले जितना रचनात्मक काम करते हैं, वह बहुत ज्यादा है। उससे अधिक की अपेक्षा करने का आपको हक नहीं है, भगवान ने मनुष्य को दो ही हाथ दिये हैं, तीसरा नहीं। अब कांग्रेसवालों का एक हाथ चुनाव पर काबू रखने और अच्छे मनुष्यों को सरकार में भेजने में व्यस्त है और दूसरा सरकार के जरिये रचनात्मक कार्य करने में लगा है तो दो के सिवा तीसरा हाथ कहाँसे लायें।

अपने दोषों के लिए तीव्र वेदना हो

इस हालत में भी बीच-बीच में कभी-कभी पंडित नेहरू या ढेबरभाई को आत्मपरीक्षण की बात सूझती है और वे कहते हैं कि हममें दोष पैठ गये हैं, इसलिए सुधार करना चाहिए। इस तरह जब पंडित नेहरू की श्रेणी जैसे आत्मसंशोधन की बात करते हैं तो कांग्रेसवाले कहते हैं कि "भगवान, हममें बहुत दोष हैं, इसलिए तू हमें उन दोषों से मुक्त कर, यह अच्छा ही है।" लेकिन इस तरह की प्रार्थना से भक्ति नहीं होती। जब अपने दोष की तीव्र वेदना होती है, तभी भक्ति हो सकती है।

शासनारूढ़ दल द्वारा रचनात्मक कार्य आश्चर्य की बात

हम लोगों ने माना है कि सदा सर्वदा राजनैतिक शक्ति ही सब कुछ कर सकती है। इस सिद्धान्त को मानने के बाद फिर

www.vinoba.in

जनसम्पर्क की बात कही जाती है तो उसका अर्थ इतना ही होता है कि लोगों के पास जाकर उनके दुःख जानना और सरकार के सामने पेश करना। उसका इससे ज्यादा अर्थ कांग्रेसवाले कर ही कैसे सकते हैं? फिर भी मैंने देखा है कि कुछ कांग्रेसवाले बहुत प्रामाणिकता से अपनी रुचि के अनुसार खादी, ग्रामोद्योग, अस्पृश्यता-निवारण आदि रचनात्मक कार्य में लगे हैं। मेरी समझ में नहीं आता है कि वे इसमें क्यों लगे हैं? लेकिन यह गांधीजी की कृपा है, नहीं तो आप इंग्लैण्ड जैसे देश की हालत देखिये। क्या वहाँ शासनारूढ़ दल कुछ भी रचनात्मक काम करता है? वहाँ सारा रचनात्मक काम एक राज्य ही करता है। उसकी नीति को ठीक रास्ते ले जाने की चर्चा करने के अलावा वहाँ कोई भी पार्टी कुछ भी रचनात्मक काम नहीं करती। लेकिन गांधीजी के कारण कुछ कांग्रेसवाले सच्चे दिल से कुछ रचनात्मक कार्य करते हैं तो मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि वे क्यों करते हैं? यह उनका उपकार ही मालूम पड़ता है। क्योंकि आज हालत ऐसी है कि जो लोग असेम्बली, पार्लमेण्ट आदि में जाते हैं, उनका बहुत सारा समय उसीमें बीतता है। फिर जो छुट्टी का समय मिलता है, उसमें कभी बारिश के कारण वे घूम नहीं सकते। कभी घर में बच्चे बीमार होते हैं तो घर भी सँभालना पड़ता है। इसमें भी जब ढेबरभाई उनको रचनात्मक काम करने का आदेश देते हैं तो जिस परिस्थिति में आज कांग्रेस है, उससे आश्चर्य होता है कि कांग्रेसवाले रचनात्मक कार्य कैसे कर पाते हैं और कृतज्ञता मालूम होती है।

आज कांग्रेस सदस्य बनने में खतरा ही क्या है?

अब मैं आपके आँगन में उपस्थित हूँ। सारे भारत के लिए मेरी जो अपील है, वही गुजरात के लिए भी है। हमें जागतिक दृष्टि से सोचना चाहिए। अगर हम सिर्फ पार्टी के नाते ही काम करते रहेंगे तो चाहे पार्टी को बजबूत बना लें। किन्तु पार्टी का अर्थ क्या है? पार्टी में जो प्रतिगामी प्रवृत्तियाँ दाखिल होती हैं, उन्हें रोकने की क्या ताकत है? गांधीजी के जमाने में कांग्रेस का मेम्बर बनना अंग्रेज सरकार का दुश्मन बनन था, एक खतरा उठाना था। लेकिन इन दिनों चार आना देकर कांग्रेस का मेम्बर बनने में कौन सा खतरा उठाना पड़ता है? राज्य करनेवाली जमात का मेम्बर बनने में कुछ खोने का है नहीं, बल्कि कुछ न कुछ पाने की ही बात है। गांधीजी कांग्रेस के सामने वनवास का कार्यक्रम रखते थे, जिससे कांग्रेस की अंतःशुद्धि हो। अब वह वनवास (जेल) नहीं रहा। इसलिए कुछ न कुछ त्याग का कार्यक्रम होना ही चाहिए, जिसकी कसौटी पर कांग्रेस जन को कसा जा सके। ऐसा कार्यक्रम न रहा तो कांग्रेस में असंख्य प्रतिगामी तत्त्व होंगे और फिर पंडित नेहरू के बाद कौन नेता होगा? ऐसा सवाल पूछने के बजाय कांग्रेस की स्थिति क्या होगी, ऐसा सवाल पूछना होगा।

प्रतिगामी तत्त्वों से भय

हिन्दुस्तान में भगवान की कृपा से नेता मिल ही जाता है। परंतु आज ऐसे असंख्य लोग कांग्रेस में पैठे हैं, जिनका कांग्रेस में होना कांग्रेस के लिए खतरनाक है। परमेश्वर की कृपा से गुजरात की कांग्रेस में ऐसे लोग कम हैं और गांधीजी के साथी ही ज्यादा हैं। लेकिन आपने देखा है कि पंडित नेहरू कहते हैं कि "लैण्ड रिफॉर्म" शीघ्र होना चाहिए। ढेबरभाई ने भी कहा कि जबतक वह नहीं होता, तब तक ग्राम-पंचायत बनाना खतरनाक साबित होगा। फिर भी आंध्र में क्या चल रहा है? वहाँपर तेलंगाना में पहले जो सीलिंग बना था, उसे अब डेढ़ गुना बढ़ाया जा रहा है। इसलिए उस बिल को रोकना पड़ रहा है। यह सब इसीलिए होता है कि असेम्बली में बहुत-से जमीन के मालिक बैठे हैं। आखिर यह "सीक्रेट" कहाँ तक रहेगा? अब तो यह "ओपेन सीक्रेट" हो गया है। इस हालत में कांग्रेस आगे ले जानेवाली जमात बनने के बजाय पीछे ले जानेवाली जमात बन जाय तो अंतर्गत खतरे से कांग्रेस को कौन बचायेगा? कांग्रेस को बाहर से कम खतरा है। इसलिए उसका दरवाजा खुला है, कोई भी अन्दर जा सकता है। इसलिए उसके सामने कुछ-न-कुछ परीक्षा का, कसौटी का कार्यक्रम होना चाहिए, जिस कसौटी पर कांग्रेस मैन कसा जा सके।

त्यागमय कसौटी का कार्यक्रम आवश्यक

जब हमारी बिहार की यात्रा चल रही थी तो वहाँके एक कांग्रेसी नेता ने खुले दिल से मुझसे कहा कि "विनोबाजी, आप बहुत जल्दी आये हैं, आपको पन्द्रह-बीस साल बाद आना चाहिए था। हमने आज तक बहुत त्याग किया है। गांधीजी के जमाने में जेल जाना पड़ता था तो घर की हालत क्या होती थी? अभी-अभी स्वराज्य के बाद हमने घर सँभाला है, कुछ जमीन हासिल की है, अभी हम जरा सुखी होने लगे हैं कि इतने में ही आप आ गये। आपका संदेश सही है, लेकिन आप बहुत जल्दी आ गये। देर से आते तो आपका काम बन सकता था। अब हमसे यह काम नहीं होगा।" मैं जानता हूँ कि त्याग की मर्यादा होती है। मनुष्य वृद्ध होता है तो एक के बाद एक त्याग नहीं कर पाता। इसलिए मैंने उन लोगों से कहा कि मैं कबूल करता हूँ कि आप सुख के अधिकारी हैं। आपसे जमीन नहीं मिली तो कोई हरज नहीं। मेरे लिए आपकी सहानुभूति ही काफी है। क्योंकि आपने अबतक काफी तपस्या ही है। यद्यपि मैंने उन लोगों से यह कहा, फिर भी हमें समझना चाहिए कि विज्ञानयुग का एक साल याने पुराने २५ साल हैं। लोग कहाँ तक सब्र करेंगे। सब्र की भी हद होती है। इसलिए कांग्रेस का यही रूप रहा तो कांग्रेस को अंदर से बड़ा खतरा है और देश को उससे खतरा है। इसलिए कोई त्याग का कार्यक्रम उठाना कांग्रेस के लिए और देश के लिए बहुत जरूरी है।

भूदान नहीं दिया तो कांग्रेसजन कैसे?

इन दिनों किसीसे पूछा जाय कि आप कितनी जमीन रखते हैं तो वह कहेगा ३० एकड़। अगर उससे कहा जाय कि लोग तो कहते हैं कि आपके पास हजार एकड़ है तो वह कहेगा, "मेरे नाम पर ३० एकड़ है।" एक भाई ने मुझे अपना छठा हिस्सा १ एकड़ दिया था। उसने कहा कि हम पाँच भाई हैं और हरएक के पाँच लड़के हैं। इसलिए मेरे नाम पर जो जमीन है, उसका छठा हिस्सा दे रहा हूँ। जैसे "नाटक कम्पनी आ रही है, आ रही है" यह कहा जाता है, वैसे ही "सीलिंग बननेवाला है" कहा जाता है। सीलिंग बनता है, तबतक लोग सारी जमीन आपस में बाँट लेते हैं। जरा सोचिये, यह आत्मवंचना है या परवंचना? क्या इससे देश बचेगा? इसलिए अब कांग्रेसवालों को एक-दूसरे से पूछना चाहिए कि भूदान में जमीन नहीं दी तो कैसे कांग्रेसजन बन सकते हो? जब कांग्रेस ऐसी भाषा बोलेगी, तब उसमें त्याग का माद्दा आयेगा और उससे कांग्रेस बचेगी।

www.vinoba.in

अब उल्टी गंगा बहानी होगी

स्वराज्य के पहले जब सरकार ने देखा कि इन लोगों ने जेल का डर छोड़ दिया है तो उसने जुर्माना करना शुरू किया। उससे आंदोलन का काम रुक गया। राजेन्द्रबाबू ने मुझसे कहा कि उस वक्त हमारा जेल का डर तो गया था, लेकिन लालच नहीं गया था। स्वराज्य के आंदोलन में लोगों को बहुत उत्साह था, क्योंकि उसमें कुछ पाना था, देना नहीं। नागपुर जेल में आज के मन्त्रियों के बारे में जेलर मुझसे कहता था कि ये लोग जेल के किसी कानून का पालन नहीं करते। लेकिन मैं डरता हूँ, क्योंकि आखिर इन्हीं-के हाथ राज आनेवाला है। वे लोग भी यही कहते थे कि आखिर हिन्दुस्तान की बागडोर हमारे ही हाथ में आनेवाली है। इस तरह उस आंदोलन में पाने की बात थी। इसमें देने की बात है, इसलिए अब गंगा उल्टी बहाने की बात है।

जब भूदान निकला तो लोगों ने पचासों बहाने निकाले कि इससे जमीन के टुकड़े होंगे, उत्पादन घटेगा आदि। वे तोताराम जो बोलते थे, उसमें और एक बात जोड़कर मैं बोल सकता था कि भूदान-आंदोलन से देश को कितना नुकसान होगा!

नेताओं का आदेश कार्यान्वित करें

इस हालत में क्या कांग्रेसजनों के लिए इतना बस है कि उनके नेता येलवाल की परिषद में गये थे और उन्होंने कहा कि ग्रामदान से देश की भौतिक और नैतिक उन्नति होगी? जब आपके नेताओं ने ग्रामदान का काम करने का आदेश दिया है तो आपको जी-जान से इस काम में लग जाना चाहिए। अगर हमारे नेताओं के आदेश को हम कार्यान्वित नहीं करेंगे तो हमारे नेता अपमानित होंगे। नेताओं के अपमानित होने से बढ़कर कोई खतरा किसी पार्टी के लिए नहीं हो सकता है। चाहे अनुयायी भले ही अपमानित हों, इसलिए जब नेताओं ने आदेश दिया है तो गुजरात की कांग्रेस को इसे उठाना चाहिए।

सहयोग न लेने की बात ही गलत

कुछ लोग मेरे पास आकर कहते हैं कि भूदानवाले हमारा सहयोग ही नहीं लेते। मैं जरा सख्त जबान में कहना चाहता हूँ कि जैसे कोई ब्राह्मण या क्षत्रिय होते हैं, वैसे भूदानवाले नाम के कोई लोग नहीं हैं।

किसीको भूदानवाला कहलाने का हक नहीं है। हमने सारी भूदान-समितियाँ खत्म कर दी हैं। हर जिले के काम की रिपोर्ट देने के लिए एक 'बेचारा' निवेदक रखा है। उसमें भी कोई दोष पैदा हुआ है, ऐसा आप कहेंगे तो जहाँ तक गुजरात का ताल्लुक है, मैं कुछ निवेदक हटाऊँगा। भूदान-समितियाँ खत्म करने से एक महान घटना बनी। जो करने की हिम्मत भारत में शायद ही कोई संस्था कर सकती हो। हर जिले में हमारी जो भूदान-समिति थी, उसे हमने यह कहकर तोड़ डाल कि समिति से लोकक्रांति नहीं होती। जबकि हर पार्टी मजबूत बनने की कोशिश करती है, हमने यह उल्टा काम किया।

अभी तो सर्व-सेवा-संघ ने भी फैसला किया है कि वह अपना चालू काम पैसे के आधार पर नहीं चलायेगा। सर्वोदय-पात्र, सूत्रांजलि, श्रमदान आदि के आधार पर चलायेगा। इसमें सर्व-सेवा-संघ नेकितना खतरा उठाया है, आप ही गौर कीजिये। अगर सर्वोदय-पात्र पर्याप्त न होंगे तो अखिल भारतीय सर्व-सेवा-संघ खत्महोगा। आज सभी चाहते हैं कि वह बढ़े, ताकि रचनात्मक काम का अच्छी तरह संयोजन हो, फिर भी मेरी सलाह से उसने यह खतरा ही उठाया है।

मैं यह भेद ही नहीं चाहता कि फलाना अमुक है, फलाना दूसरा है। मैं चाहता हूँ कि हर नागरिक इस काम में लगे। कांग्रेवालों को काम करने से कौन रोकता है? वे अपना काम चलायें, जमीन हासिल करें और नियमों के अनुसार बाँटते चले जायँ। सर्व-सेवा-संघ को सिर्फ काम के बारे में इतल्ला करें। हमने किसीको इस काम का ठेका नहीं दिया है। यह हमारी ठेकेदारी नहीं। अलावा इसके, जो बेचारे भूदान-कार्यकर्ता जवान हों और नासमझी से कुछ गलत काम करते हों, उनकी गलतियाँ सुधारनी चाहिए। उन्हें आपसे माफी माँगनी चाहिए। मैंने उन्हें तो यह आदेश दिया है कि आप अपने में सुधार करें, लेकिन मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि आप यह बोल नहीं सकते हैं कि वे हमारा सहयोग नहीं लेते हैं। आप कौन हैं और वे कौन हैं? आप अखिल भारतीय कांग्रेस संस्था के सदस्य हैं। क्या भूदान, ग्रामदान की जिम्मेदारी नारायण देसाई पर है और यहाँके कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पर नहीं? ये तो आप के बच्चे हैं। यह ठीक है कि नया खून कुछ उछल-कूद करता है। इसलिए आप यह कह ही नहीं सकते हैं कि वे हमारा सहयोग नहीं लेते।

घर-घर सर्वोदय-पात्र रहे

मैं चाहता हूँ कि गुजरात के हर घर में सर्वोदय-पात्र रखा जाय। कोई किसी भी पार्टी का हो, जो शांति चाहता हो, वह अपने घर में सर्वोदय-पात्र रखे।

मुझे बहुत खुशी हुई कि आपने मुझे अपने सामने बोलने का मौका दिया। जब मणीबेन ने कहा कि कांग्रेसवालों से अलग बात करनी चाहिए तो मुझे बहुत खुशी हुई। मैं कहना चाहता हूँ कि जितनी बार कांग्रेसवालों के सामने बोलने का मौका आयेगा, उतनी बार मैं बोलूँगा। आप समझें कि यह अपना ही आदमी है। ●●●

अनुक्रम

१. सामाजिक तरक्की के लिए स्त्री-शिक्षा की अनिवार्यता
ममदोट २१ नवंबर '५९ पृष्ठ ८१७
२. ग्राम-स्वराज्य से निर्णय-शक्ति और विशुद्ध लोकतन्त्र
भरुच ४ अगस्त '५८ „ ८१८
३. कांग्रेस जन अब त्यागमय भूदान-कार्य करें
कठौर ३० सितम्बर '५८ „ ८२०

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा', वाराणसी।
www.vinoba.in